20

आप यीशु के साथ क्या करेंगे?

इतना विशाल और जटिल होने पर भी, पवित्र शास्त्र के अनुसार, यह संसार केवल अनन्तकाल में रहने के लिए हमारी तैयारी का स्थान है। इसलिए, जीवन यहां एक छोटी सी शुरुआत है। हर एक मानवीय जीव एक ज़िंदा जान है, जिसका इस संसार से आगे स्वर्ग या नरक में रहना तय है। नया नियम हमारे लिए अनन्तकाल तक रहने वाले जीवन और विनाश का वर्णन करता है (मत्ती 25:46)। यह बताता है कि इन दो स्थानों के मध्य रहने के लिए कोई और स्थान इसके बाद नहीं है। मृत्यु के समय या यीशु की वापसी पर, सभी लोग-जीवित और मृत- अपने अन्तिम स्थानों में प्रवेश करेंगे और उनमें अन्तकाल तक रहेंगे। कितना गज़ीर विचार है! यीशु के बारे में हम जो कुछ करते हैं, उसका तात्पर्य अनन्तकालिक है। हम आपसे यह निर्णय लेने का अनुरोध करते हैं कि आप एक मसीही बन जाएं और अपना जीवन मसीह के लिए जीना आरज़्भ करें ताकि आपको भरपूरी का जीवन अब (यूहन्ना 10:10) और अनन्त जीवन आने वाले संसार में मिले (1 यूहन्ना 2:25)।

आप उत्तम जीवन की खोज अर्थात ''कलीसिया'' के विश्वासी सदस्य बनने के इस अध्ययन, जैसा कि बाइबल में इस विषय को प्रस्तुत किया गया है, के अन्त में पहुंच चुके हैं। परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह ने इस संसार में आकर अपने जीवन, शिक्षाओं और प्रेम से दिखाते हुए कि परमेश्वर कैसा है और परमेश्वर की इच्छा क्या है, आपका संक्षिप्त परिचय करवाया है। वह हमारे पापों के लिए क्रूस पर मरा जिससे हर एक के लिए जो उसके उद्धार के संदेश को मानता है परमेश्वर की संतान बनना और संतान के रूप में जीना सज़्भव हो सके। आपने ध्यानपूर्वक कलीसिया के स्वभाव

का भी अध्ययन किया है जो मसीह के जीवन तथा मृत्यु का परिणाम है और रहती है। आपने देखा कि कोई कैसे उस कलीसिया में प्रवेश करता है और इस संसार में कलीसिया बनकर कैसे जीता है। अब आप एक बड़े प्रश्न पर आ चुके है, एक ऐसा अति गज़्भीर प्रश्न जिस पर शायद कभी आपने विचार किया हो: ''मैं यीशु के बारे में क्या करूं?''

सभी मसीहियों की सच्चे मन से प्रार्थना और पक्की आशा है कि आप अपने दिल में मसीही बनने का निश्चय करें और अपने बाकी जीवन में मसीह के विश्वासी अनुयायी बन कर रहें। अध्ययन करते हुए, हो सकता है कि आपने पहले भी अपने आप से कहा हो, ''मैं एक मसीही बनना चाहता हूं।'' हो सकता है कि आपने सोचा हो कि मसीही बनने के लिए मेरे मन में कुछ प्रश्न हैं और यदि मुझे उन प्रश्नों का उत्तर मिल जाए, तो मैं मसीही बन जाऊंगा।

यदि आप प्रश्न पूछ रहे हैं, तो इस पुस्तक के बाकी भाग को ध्यानपूर्वक पढ़ें। इसमें आपको कुछ उत्तर मिल जाएंगे। साथ ही, यह कुछ पगों की सूची देती है और यह व्याज़्या भी करती है जो एक मसीही बनने के लिए और बनकर जीने की आपकी इच्छा को पूरा करने के लिए आवश्यक हैं।

पग एक: उद्धार

यकीनन ही, एक मसीही बनने के लिए, पहला कदम उठाना होगा। संसार में कोई भी, कहीं भी एक मसीही बन सकता है यदि वह मसीह में विश्वास करता है (यूहन्ना 8:24), मन फिराता है (अर्थात अपने पापों से मुड़ता है; प्रेरितों 17:30), यीशु के मसीह होने का अंगीकार करता है (रोमियों 10:10), और अपने पापों की क्षमा के लिए मसीह में बपतिस्मा लेता है (प्रेरितों 2:38)।

आइए हम उन कुछ प्रश्नों का उत्तर दें जो आप पूछ सकते हैं:

''बच्चों के बारे में?''

नया नियम कभी भी शिशुओं या छोटे बच्चों के बपतिस्मे का उल्लेख नहीं करता। उन्हें बपतिस्मा लेने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वे प्रभु के सामने अपने भोलेपन में सुरक्षित हैं। वे सही और गलत की पहचान नहीं कर सकते इसलिए परमेश्वर की दृष्टि में वे जवाबदेह नहीं हैं। जब उन्हें समझ आ जाती है कि प्रभु उनसे

क्या चाहता है, फिर उन्हें प्रभु के उद्धार के मार्ग को मानते हुए मसीही बन जाना चाहिए (जैसे अन्य सभी लोगों को)। परन्तु, अपने भोलेपन में, वे परमेश्वर के सामने सुरक्षित हैं क्योंकि उन्होंने पाप नहीं किया है। मन से समझने की उनकी चाह, अगुआई करने वालों पर उनका पूरा विश्वास, उन पर उनका पूरा भरोसा और शिक्षा लेने की योग्यता एक उदाहरण है जिसकी वयस्कों को नकल करनी चाहिए। (मत्ती 18:3)। बच्चों के लिए यीशु ने कहा, ''क्योंकि स्वर्ग का राज्य ऐसों ही का है''(मत्ती 19:14ख)।

एक युवक या वयस्क होने के कारण जो उद्धार के मार्ग को समझता है, जो जानता है कि आपने परमेश्वर के सामने पाप किया है, और जो जानता है कि उद्धार के लिए आपका मसीही बनना आवश्यक है, अब आपके लिए प्रभु की उद्धार की योजना की आज्ञा का पालन करना आवश्यक है।

''मैं क्या करूं?''

अपने अध्ययनों में, आपने देखा कि एक मसीही कैसे बनना है। आप यीशु के परमेश्वर का पुत्र होने के बारे में पवित्र शास्त्र के प्रमाण और गवाही को स्वीकार करके एक मसीही बन सकते हैं। संसार की एकमात्र सही पुस्तक, बाइबल ने, आपको बता दिया है कि यीशु कौन है और वह संसार में क्या करने आया। क्या आप उसके संदेश को स्वीकार करते हैं? यदि करते हैं, तो आप यह विश्वास करने लगे हैं कि यीशु मसीह ही परमेश्वर का पुत्र है जो आपको आपके पापों से बचाने के लिए और आपको परमेश्वर की संतान बनना सञ्भव बनाने के लिए क्रूस पर मरने के लिए संसार में आया।

आपको भी अपने आप से पूछना चाहिए, ''क्या मैं अपने पापों से मुड़ गया हूं?'' इस संसार में आप कभी सञ्पूर्ण नहीं होंगे, परन्तु अब से आप मन फिराकर अपने जीवन से पाप को निकालकर और गञ्भीरतापूर्वक प्रभु के वचन के अनुसार चलने का सकंल्प लेते हैं। आपके निष्कपट मन फिराव के बाद, यीशु आपका प्रभु होगा और पवित्र शास्त्र आपके लिए विवरण पुस्तक, जिससे जीवन में आपको मार्गदर्शन मिलेगा।

इसके बाद आपको कोई ऐसा व्यक्ति ढूंढना होगा जो आपको आपके पापों की क्षमा के लिए मसीह में बपतिस्मा दे सके। हो सकता है कि आपके समाज में मसीह की कलीसिया हो। यदि है, तो उस कलीसिया के किसी सदस्य से सञ्पर्क करें और उससे किसी मसीही पुरुष के बारे में पूछें जो आपको मसीह में बपतिस्मा दे सके। आप उस मसीही व्यक्ति को बताएं कि आप दूसरों के सामने मसीही होने का अंगीकार करना चाहते हैं और आप चाहते हैं कि वह आपको आपके पापों की क्षमा के लिए

मसीह की देह में बपतिस्मा दे। आपकी सहायता करने में उसे प्रसन्नता होगी।

''मैं मसीह की कलीसिया को कैसे ढूंढ सकता हूं?''

आज की इस धार्मिक उलझन में, आप यह सुनिश्चित करना चाहेंगे कि आपने लोगों के ऐसे समूह से सम्पर्क किया है जो प्रजु की कलीसिया में प्रवेश कर चुके हैं और लगातार प्रजु की कलीसिया बने हुए हैं। एक तरह से आप बता सकते हैं कि वे अपने आपको क्या कहते हैं। उन्होंने किसी मनुष्य का नाम नहीं पहना होगा। वे अपने आपको मसीह की कलीसिया कहेंगे और स्वयं को कलीसिया के लिए उन पदनामों से सज्ञोधित करेंगे जो बाइबल में मिलते हैं। यदि आप देखें कि उन्होंने अपने आपको कोई ऐसा नाम दिया है जो बाइबल के अनुसार नहीं है, तो यह एक चिह्न है कि वे किसी सज्प्रदाय (डिनोमिनेशन) का भाग हैं और इसलिए प्रभु की कलीसिया से कुछ भिन्न हैं। एक और तरीके से यह जांचकर आप बता सकते हैं कि कोई समूह मसीह की कलीसिया है व परमेश्वर के वचन के अनुसार चल रहे हैं। उनके लक्ष्यों और उद्देश्यों को निश्चित करने के लिए आप निज़ प्रश्न पूछ सकते हैं:

- क्या आप केवल नये नियम की कलीसिया बनने की कोशिश कर रहे हो?
- क्या प्रेम, दया, एकता, तरस, और समाज की सेवा की जाती है?
- जब आप रविवार को इकट्ठे होते हैं तो आपकी आराधना सेवा कैसी होती है?
- क्या आप हर सप्ताह के पहले दिन (हर रविवार) प्रभु-भोज लेते हो, जैसे कि प्रेरितों 20:7 में बताया गया है?
- क्या आप नये नियम के उदाहरण के अनुसार साज़ों के बिना गाते हो?
- क्या आप यीशु के नाम से प्रार्थना करते हो?
- क्या आप बाइबल का अध्ययन अपने एकमात्र धर्मसार और मार्ग दर्शक के रूप में करते हो?
- क्या आप अपनी आमदनी के अनुसार हर रविवार चन्दा देते हो (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)?
- कलीसिया के रूप में आप कैसे संगठित हो? क्या आपके संगठन में प्रचारकों, शिक्षकों, प्राचीनों और सेवकों से अधिक ओहदे हैं?[1]
- क्या आपका सांसारिक मुज़्यालय है, या आप केवल मसीह को ही अपने सिर के रूप में देखते हो?[2]

- इस संसार में आपका मिशन क्या है: क्या आप प्रभु की सबसे बड़ी आज्ञा को पूरा करने की चाह रखते हैं (मत्ती 28:19, 20)?

आप ये प्रश्न पूछ कर समझदारी करेंगे, क्योंकि आप तो यह समझना चाह रहे हैं कि वे कौन हैं। आप प्रभु की कलीसिया के सदस्य बनना चाहते हैं, न कि मनुष्यों के द्वारा बनाये गये सञ्जदायों के सदस्य। (देखिए पृष्ठ 249 से 251)।

यदि आप मसीह की कलीसिया को नहीं ढूंढ पाते तो फिर आपको ही यह मण्डली स्थापित कर लेनी चाहिए। आप इसे इस प्रकार स्थापित कर सकते हैं। किसी धार्मिक पुरुष को ढूंढें जो सच्चे परमेश्वर की सेवा करने में रुचि रखता हो। उससे कहें कि बाइबल अध्ययन के साथ वह यह किताब पढ़े। फिर आप उससे कहें कि यदि वह आपके साथ मसीही और प्रभु की कलीसिया बनने में रूचि रखता है जो आपके समाज में है, तो आपका साथ दे। यदि वह मसीह के पीछे चलना चाहे, तो आप एक दूसरे को बपतिस्मा दे सकते हैं। आप पास के किसी झरने, झील, अथवा तालाब पर जा सकते हो (जहां किसी को डुबोने के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी उपलब्ध हो)।

उसे बपतिस्मा देने के लिए यह सुनिश्चित कर लें कि आपने बाइबल की तीन आज्ञाओं को पूरा किया है। पहली, उससे यह प्रश्न पूछें: ''क्या तुम विश्वास करते हो कि यीशु मसीह परमेश्वर का पुत्र है?'' हम रोमियों 10:10 में इस आज्ञा को देखते हैं। उसे यह पुष्टि करनी चाहिए कि वह यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानता है।

दूसरा, आपके लिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि आप उस व्यक्ति को पापों की क्षमा के लिए मसीह की देह अर्थात कलीसिया में बपतिस्मा दे रहे हैं। इसलिए उसे बपतिस्मा देने से पहले, ऊंचे स्वर से वर्णन करें, वहां उपस्थित लोगों के लाभ के लिए भी और उसको याद दिलाने के लिए भी कि क्या हो रहा है। यहां एक उदाहरण है कि आप कैसे कह सकते हैं (मत्ती 28:19, 20; रोमियों 6:3; प्रेरितों 2:38; और मरकुस 16:16 के आधार पर):

> मैं तुझें मसीह की आज्ञा से, यीशु मसीह के लहू के द्वारा तुझारे पापों की क्षमा के लिए, मसीह की आत्मिक देह में, जो कि नये नियम की कलीसिया है, पिता, पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम में बपतिस्मा देता हूं।

तीसरा, उसे बपतिस्मा देने के लिए, यह सुनिश्चित करें कि आप उसे पानी में पूरी

तरह से डुबोते हैं। याद रखें, नये नियम का बपतिस्मा पानी में डुबोना है (रोमियों 6:4)। यहां कुछ चित्र दिए गए हैं कि बपतिस्मा किस प्रकार हो सकता है।

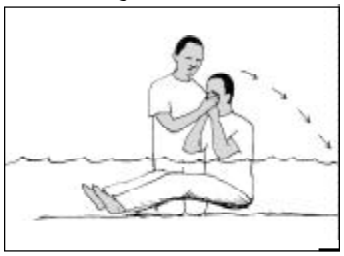

बपतिस्मा लेने वाला/वाली गहरे पानी में बैठ जाए और तब तक पीछे की ओर झुके जब तक वह पानी में पूरी तरह डूब न जाए।

बपतिस्मा देने की टंकी या जहां प्राकृतिक रूप में पानी जमा हो, में बपतिस्मा लेने वाला/वाली तब तक पीछे की ओर झुक जाए जब तक वह पानी में पूरी तरह डूब न जाए।

जब आप उसे बपतिस्मा दे चुके हों, तो उसी प्रकार आप भी उससे बपतिस्मा लें। उसे भी आपसे वही प्रश्न पूछना चाहिए, और उसे चाहिए कि वह स्पष्ट बताए कि वह आपको बपतिस्मा क्यों दे रहा है, बिल्कुल उसी प्रकार जैसे आपने उसे बपतिस्मा देते हुए बताया था।

बपतिस्मा लेने के बाद, आप एक मसीही अर्थात प्रभु की कलीसिया के एक सदस्य हैं। यद्यपि प्रभु की कलीसिया पहले आपके समाज में नहीं थी, परन्तु अब यह है क्योंकि आप मसीह की कलीसिया हैं! आपने एक मसीही बनकर अपने क्षेत्र में कलीसिया की स्थापना कर दी।

पग दो: एक मसीही के रूप में जीवन व्यतीत करना

बेशक, दूसरा कदम जो आपको उठाना है वह निरन्तर, कभी न खत्म होने वाला कदम है, अर्थात मसीही जीवन जीना। अब आप एक मसीही हैं, और आपको एक मसीही के रूप में जीना चाहिए (पृष्ठ 252 पर शीर्षक ''जो प्राचीनों के लिए है, वह सभी मसीहियों के लिए अनिवार्य है'' में चार्ट देखिए)।

एक मसीही का जीवन कैसा होना चाहिए? एक मसीही के जीवन को संक्षिप्त रूप से कहने का अच्छा ढंग यह है कि वह वैसा है जो उसके नाम का अर्थ है अर्थात मसीह का एक अनुयायी। वह वैसा ही मसीही है जो मसीह का सा जीवन व्यतीत करता है (फिलिप्पियों 1:21)। एक मसीही के लिए मसीह ही जीवन है।

पवित्र शास्त्र में से ढूंढना

कोई भी जो मसीह के पीछे चलता है, उसका एक महत्वपूर्ण गुण उसे विशेष बना देगा अर्थात पिता की इच्छा के आगे वचनबद्ध होना। यीशु हर प्रकार से सज़्पूर्ण था, परन्तु उसके जीवन का एक विशेष गुण जिसकी मुझे और आपको नकल करनी चाहिए, वह है पिता के प्रति सच्ची आज्ञाकारिता। मसीही जीवन का अर्थ है, परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए बाइबल में से ढूंढना और फिर नम्रता से, भय से, और प्रेमपूर्वक उस इच्छा को मानना। एक मसीही परमेश्वर के वचन के निकट रहता है। वह इसे प्रतिदिन पढ़ता है और इसमें से जो कुछ भी सीखता है, उसे व्यवहार में लाने की कोशिश करता है।

यीशु की जीवनशैली की नकल करने का प्रयत्न करना

यीशु के लिए हमारे जीवन के मार्गदर्शक के रूप में तीन और सिद्धांत ''सुनहरा नियम'', दया और प्रार्थना होने चाहिए। यीशु का अनुसरण करने का अच्छा ढंग है, हमेशा अपने आप से पूछना कि ''मैं किस प्रकार का व्यवहार पाना पसन्द करूंगा?'' ''सुनहरे नियम'' (मत्ती 7:12) की पालना तब होती है जब हम यह निर्णय लेते हैं कि हमें किस प्रकार का व्यवहार पसन्द है और फिर उसी प्रकार का व्यवहार दूसरों के साथ करते हुए आगे बढ़ते हैं। यह नियम मसीह के जीवन का ढंग था, और इस संसार में जीने का सबसे उत्तम ढंग यही है।

यीशु तरस से भरा मनुष्य था। ''दया'' शब्द का अर्थ दूसरों के ''साथ सहानुभूति'' है। यीशु ने निर्धनों, ज़रूरतमन्दों और असहाय लोगों से प्रेम किया था। उसका हृदय उन तक पहुंचा। उसने उनकी सेवा की। इसीलिए, एक मसीही को ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो दूसरों की चिन्ता करता हो और अपने उस प्रेम से लगातार उनकी सहायता करता हो (मत्ती 9:36)।

यद्यपि यीशु परमेश्वर का पुत्र था, उसने अक्सर पिता से- अकेले में, लोगों में और छोटे समूह में प्रार्थना की। एक मसीही भी लगातार परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

क्योंकि अब आप एक मसीही हैं, परमेश्वर आपका पिता है। उसने आपको अपना बना लिया है। विश्वासी हृदय से उससे लगातार प्रार्थना करें। यीशु के नाम में उससे प्रार्थना करते हुए, अपने जीवन में उसकी इच्छा पूरी होने के लिए कहें, यहां एक नमूना दिया गया है कि आप परमेश्वर से प्रार्थना कैसे कर सकते हैं:

परमेश्वर को स बोधित करें: हे प्रेमी पिता,
उसकी महिमा करें: तेरा नाम पवित्र माना जाए।
उसका धन्यवाद करें: जो आशिषें तुमने दी हैं उनके लिए हम बहुत आभारी हैं. ... (उनमें से कुछ का नाम लें।)
उसके आगे प्रार्थी बनें: हमें यह चाहिए, इतना ही हम बता सकते हैं। यदि ये बिनतियां तेरी इच्छा के अनुसार हैं तो इन्हें स्वीकार करना।
उसके आगे प्रार्थी बनें: जिस प्रकार हम दूसरों को क्षमा करते हैं हमारे पाप क्षमा करना। हमें बुराई से निकालना।
उसकी स्तुति करें: सारी महिमा तुझे मिले।
समापन करें: हम यह प्रार्थना यीशु के नाम में करते हैं। आमीन।

सम्भवत: आपने प्रार्थना के इस नमूने को पहचान लिया होगा क्योंकि यह प्रभु के द्वारा दिए गए नमूने के एक अंश में से लिया गया है जो उसने अपने चेलों को मत्ती 6:9-13 में सिखाया। उसकी प्रार्थना का कुछ भाग हम पर लागू नहीं होगा (उदाहरण के लिए, राज्य के आने की बिनती वाला अंश, क्योंकि उसका राज्य पिन्तेकुस्त के दिन आ गया), परन्तु इसमें से अधिकांश भाग हम पर लागू होता है। याद रखें कि यहां दिया गया नमूना केवल एक नमूना है और परमेश्वर के सामने किसी के विचारों को व्यक्त करने के लिए केवल एक तरतीब है।

आइए इस सच्चाई पर ज़ोर दें अर्थात इस पर कि आप सज़्पूर्ण नहीं होंगे। मानवीय जीव सज़्पूर्ण नहीं हो सकते, परन्तु हम अपने हृदयों को उसकी इच्छा के अनुसार चलाने के लिए अर्पण कर सकते हैं। असफल होने पर, हम उठ कर मन फिरा सकते हैं और परमेश्वर से क्षमा मांग सकते हैं, और फिर से उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए तैयार हो सकते हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि हम उसकी इच्छा को पूरा करने के लिए प्रयासरत हैं। हम परमेश्वर की कृपा से, विश्वास के द्वारा बचाये जाएंगे न कि सिद्ध होने के कारण (इफिसियों 2:8)। विश्वास रखने का अर्थ ईमानदारी से उसकी इच्छा को पूरा करने की चाह है।

जब हम इस तरह असफल हो जाएं कि हमारे कारण दूसरों को कष्ट हो, तो हमें उनसे माफी मांग लेनी चाहिए और उन्हें यकीन दिलाना चाहिए कि हम शर्मिन्दा हैं और उन्हें यह भी विश्वास दिलाएं कि भविष्य में हम अच्छा करने की कोशिश करेंगे (याकूब 5:16)। यदि हम पाप करते हैं और हमारे पाप से सारी कलीसिया को कष्ट होता है, तो हम कलीसिया के सामने आकर क्षमा मांग सकते हैं, और बिनती कर सकते हैं कि मसीह में हमारे भाई तथा बहनें हमारे लिए प्रार्थना करें (याकूब 5:16)। परमेश्वर हमें क्षमा करेगा और कलीसिया भी हमें क्षमा करेगी।

मसीही जीवन में प्रवेश करने पर पवित्रशास्त्र का एक खण्ड जो आपको पढ़ना चाहिए, वह नये नियम का आरम्भ है अर्थात मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना, जिसमें मसीह के जीवन का वर्णन किया गया है। इसे पढ़ने और अध्ययन करने से आपको समझ आएगी कि यीशु किस तरह इस पृथ्वी पर रहा। आप उसके बारे में जो कुछ भी सीखते हैं उससे आपको उसके और निकट आकर उसके पीछे चलने में सहायता मिलेगी।

पग तीन: परमेश्वर की आराधना करना

एक मसीही बनने के लिए लगातार परमेश्वर की आराधना आरम्भ करने का तीसरा पग आपको उठाने की आवश्यकता है। यदि आपके आस पड़ोस में मसीह की कलीसिया है, तो आपको उनके साथ रविवार को और किसी भी समय इकट्ठे होकर आराधना करने के लिए मिलना चाहिए। वे हर रविवार भजन गाने, प्रार्थना करने, परमेश्वर के वचन का अध्ययन करने, प्रभु-भोज लेने और अपनी आमदनी में से चंदा देने के लिए जैसे परमेश्वर ने उन्हें आशीष दी इकट्ठे होते होंगे। आपको उनके साथ आराधना की इन सभी बातों में संगति करनी चाहिए। (देखिए पृष्ठ 132.)

यदि आपको निकटवर्ती समाज में प्रभु की कलीसिया की कोई मण्डली नहीं मिलती, तो आप अपने घर में, किसी खाली इमारत में, या किसी पेड़ के नीचे परमश्वेर की आराधना करना आरम्भ कर सकते हैं। समय बीतने पर, यदि सम्भव हो, तो आप को आराधना के लिए एक जगह बना लेनी चाहिए। नया नियम कहता है कि शास्त्र के अनुसार आराधना कहीं भी, जहां यीशु के नाम में दो या तीन लोग इकट्ठे हों हो सकती है (मत्ती 18:20)।

कलीसिया के रूप में मिलना

नये नियम में आरम्भिक मसीही सप्ताह के पहले दिन, अर्थात रविवार को इकट्ठे होते थे। यह वह दिन था जब प्रभु मृतकों में से जी उठा था। आरम्भिक मसीही रविवार को आराधना के लिए इकट्ठे होकर उस भोज में हिस्सा लेते थे जिसकी स्थापना यीशु ने की थी कि उसकी मृत्यु और जी उठने को स्मरण रखा जाए। यह स्पष्ट है कि वे हर रविवार इस भोज में से लेते थे। यह प्रभु के हर दिन लिया जाने वाला "प्रभु भोज" (1 कुरिन्थियों 11:20) था। इब्रानियों 10:25; 1 कुरिन्थियों 11:22; 16:1, 2; और प्रेरितों 20:7 का ध्यानपूर्वक अध्ययन करें।

प्रभु भोज लेना

मसीह ने प्रभु भोज की स्थापना करते हुए दो वस्तुओं का इस्तेमाल किया: दाख का रस और अखमीरी रोटी। हमारा प्रभु अपने चेलों के साथ फसह खा रहा था जब उसने उन्हें यह भोज लेने के लिए कहा। फसह के भोज में केवल रोटी और पेय ही शामिल होता था, जो कि दाख के रस (एक प्रकार के अंगूर का रस) और पानी का मिश्रण था। यीशु ने अपने चेलों को बताया कि उस रोटी को खाकर उसकी देह को याद रखें जो उनके लिए दी गई थी। उसने उन्हें कटोरे में से, अर्थात दाख के रस में से पीने के लिए दिया और कहा कि उसके लहू को याद रखें जो उनके लिए बहाया गया था।

आपको प्रभु के निर्देशों और प्रेरितों की पुस्तक में से मसीहियों के उदाहरणों पर चलना चाहिए। प्रत्येक रविवार आप में से जो मसीह के आज्ञाकार हों उन्हें आराधना के लिए इकट्ठे होना चाहिए। आपको गाना, प्रार्थना और परमेश्वर के वचन का अध्ययन करना चाहिए। आराधना सेवा में, उस भोज में से भी लें जो यीशु ने आपको दिया है। एक प्लेट में कुछ अखमीरी रोटी रखें। रोटी जो मसीह की देह और उसके महान बलिदान का प्रतीक है, के लिए प्रभु से प्रार्थना करें कि वह आपके धन्यवाद को स्वीकार करे। फिर, रोटी हर एक मसीही तक पहुंचा दें जो इसमें से लेना और यीशु की देह को याद करना चाहता/चाहती है।

प्रभु भोज की रोटी बनाने के लिए केवल सामान्य वस्तुओं की आवश्यकता होती है: आटा, पानी, नमक, और तेल। खमीर बिल्कुल नहीं मिलाया जाता। आपके हाथ के आकार की दो रोटियां बनाने के लिए नमूना यहां दिया गया है।

सामग्री:

1 कप गेहूं या जौ का आटा	1 छोटा चम्मच पानी
3 छोटे चम्मच तेल	चुटकी भर नमक

निर्देश:

ऊपर दी गई सामग्री को मिलाकर आटा गूंध लें। गुंधे हुए आटे को आग में या तवे पर रोटी बनाकर खसता होने तक पका लें। गुंधे आटे की रोटी में छेद कर उसे लगभग दस मिनट के लिए 350°f अथवा 175°C के तापमान पर ओवन में भी पकाया जा सकता है।

दूसरा, कटोरा अर्थात प्याला जिसमें दाख का रस हो, लें। प्याले के लिए और उस बहुमूल्य लहू के लिए जो यीशु ने हमारी क्षमा के लिए बहाया, धन्यवाद देते हुए, परमेश्वर से प्रार्थना करें। प्रार्थना के बाद कपों को उपस्थित मसीहियों में बांट दें, ताकि हर कोई उस कप में से ले सके और याद रखे कि यीशु का लहू हमारे लिए बहाया गया था।

जब यीशु ने भोज की आज्ञा दी तो उसने ''दाख का रस'' अर्थात अंगूर का रस इस्तेमाल किया। अंगूर का रस व्यापक रूप से समस्त संसार में उपलब्ध है; परन्तु यदि यह आपके क्षेत्र में दाख का रस उपलब्ध नहीं है, तो अंगूरों को एक बर्तन में निचोड़ कर बनाया जा सकता है। यदि सम्भाल कर रखा जाए तो अंगूर के मौसम में निकाला गया अंगूरों का रस पूरा साल रह सकता है। दाख का रस किशमिश (सूखे अंगूर) को पानी में उबालकर भी निकाला जा सकता है। किशमिश को निकालकर, बाकी रस भोज के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

रख छोड़ना, या चन्दा देना

हर एक मसीही को प्रभु के काम के लिए कुछ ''बचा कर रख छोड़ना'' चाहिए, जब कलीसिया आराधना के लिए इकट्ठी हो तो नये नियम की शिक्षा के अनुसार हर एक मसीही को अपनी आमदनी में से कुछ दान देने का अवसर मिलना चाहिए (1 कुरिन्थियों 16:1, 2)। इस चन्दे को इकट्ठा करने के लिए कोई बर्तन सब के पास लेकर जा सकते हैं या मसीहियों के लिए धन अथवा कीमती उपहार जो उन्होंने परमेश्वर के लिए रख छोड़े थे, को डालने के लिए एक स्थान बनाया जा सकता है। याद रखें कि यह आराधना की अभिव्यक्ति है जो भयपूर्वक और आनन्द से होनी

चाहिए। जो दान दिये जाते हैं, उनका इस्तेमाल कलीसिया के काम के लिए किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए इकट्ठे हुए दान को औरों तक सुसमाचार के प्रचार, निर्धनों की सहायता, अध्ययन के लिए बाइबल खरीदने, और किसी भी और उद्देश्य को पूरा करने के लिए किया जा सकता है जो कलीसिया के काम से सम्बन्ध रखता हो। एकत्र हुए दान के इस्तेमाल का निर्णय कलीसिया का होना चाहिए न कि केवल एक ही व्यक्ति का।

यहां एक उदाहरण दिया जा रहा है कि आराधना सभा कैसे कार्यबद्ध की जा सकती है:

प्रार्थना
गीत या भजन
बाइबल में से एक अध्याय पर विचार या यदि योग्य शिक्षक अथवा प्रचारक उपलब्ध हो तो प्रवचन
गीत
प्रभु-भोज के सम्बन्ध में बाइबल में से पढ़ना
प्रभु-भोज लेना
गीत
अपनी आमदनी के अनुसार चन्दा देना
गीत
प्रार्थना

आराधना की तरतीब कैसी भी हो परन्तु इसमें इन बातों में से हर एक को शामिल किया जाना चाहिए।

मण्डली में सभाएं करना

स्थानीय मण्डली को अपना काम ''सज़्यता और क्रमानुसार'' (1 कुरिन्थियों 14:40) करने के लिए, मण्डली के पुरुषों को समय-समय पर मिलना आवश्यक है। यह वहां और भी अधिक आवश्यक हो जाता है जहां कोई प्राचीन न हो। ये सभाएं परमेश्वर के लिए नियम बनाने के उद्देश्य से नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करने के लिए हैं कि स्थानीय देह की आराधना और काम मसीह के ढंग के अनुसार हो रहा है। सभाएं करने से आराधना का समय, आराधना सभा में सहायता के लिए नियुक्तियां

करने, भले कामों के लिए योजना बनाने और अन्य आत्मिक विषयों पर विचार करने और निर्णय लेने के लिए उपयुक्त समय और स्थान मिल जाता है। यह आवश्यक है कि सभा में भाग लेने वालों में से हर एक का मसीह जैसा स्वभाव हो (इफिसियों 4:1-3)। किसी ने कहा है, ''हर एक को अपनी बात कहने का अधिकार है, परन्तु अपने ढंग के अनुसार आशा करने का अधिकार नहीं।'' यह एक अच्छा आदर्श है, मण्डली के विषयों पर विचार करते हुए, हर निर्णय लेने के बारे में ये प्रश्न पूछे जाने चाहिए:

- क्या यह बाइबल के अनुसार है?
- क्या इससे परमेश्वर की महिमा होगी?
- क्या इससे सुधार होगा?
- क्या यह काम करेगा?

पुरुषों को इस बात पर एकमत होना चाहिए कि ये सभाएं कितनी बार और कब होंगी। उन्हें ऐसा समय चुनना चाहिए जब अधिक से अधिक संख्या में पुरुष उपस्थित हो सकें। प्रौढ़ मसीही भाइयों में से एक को सभाओं की अगुआई करने के लिए चुना जाना चाहिए। इस ज़िम्मेदारी को लेने वाले को बदलते रहने में समझदारी है। यह कोई अधिकार की स्थिति नहीं है, बल्कि आगे बढ़ने का व्यावहारिक ढंग है। इसमें लिए जाने वाले निर्णयों से लोगों की सहमति नज़र आती हो। एक व्यक्ति को इन निर्णयों का हिसाब रखना चाहिए। एक सभा इस प्रकार से हो सकती है:

प्रार्थना
पुराना कार्यक्रम - पिछली मीटिंगों से छोड़ी गई बातचीत; प्रगति की रिपोर्ट और निर्धारित ज़िम्मेदारियां।
नया कार्यक्रम - आवश्यकताओं की ओर ध्यान, भावी योजनाएं, नियुक्तियां, और आध्यात्मिक चिन्ताएं।
प्रार्थना

प्रतिदिन परमेश्वर की आराधना करना

आपको अपने हृदय में और अपने सांसारिक परिवार के साथ प्रतिदिन परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए। हर खाने पर, खाने से पहले उस भोजन के लिए धन्यवाद

करते हुए परमेश्वर से प्रार्थना करें। परमेश्वर के सामने अपनी आवश्यकताओं को प्रकट करते हुए उन सभी बातों के लिए जो उसने आपके लिए की हैं, धन्यवाद और स्तुति करते हुए, अपने परिवार के साथ निरन्तर प्रार्थना करें।

बेशक, आपको रविवार के अलावा और दिनों में भी परमेश्वर की आराधना करनी चाहिए। उस आराधना सभा को मिलाकर प्रभु भोज लेने और चन्दा देने के लिए आपको रविवार को हमेशा इकट्ठे होना चाहिए। उससे भी बढ़कर, आपको साथी मसीहियों से सप्ताह के अन्य दिनों में भी बाइबल अध्ययन, प्रार्थना, और गाने के लिए मिलना चाहिए। मसीहियों के लिए मिलते रहना, इकट्ठे आराधना करना और प्रभु में एक दूसरे को उत्साहित करना आवश्यक है।

प्रभु के दास के रूप में, आपको चाहिए कि आप उसे उसके वचन को प्रतिदिन पढ़ने और अध्ययन द्वारा आपसे बात करने दें। आप प्रतिदिन प्रार्थना द्वारा उससे बात कर सकते हैं।

पग चार: भले काम करना

चौथा कदम, जो आपको उठाना है वह है प्रभु की सेवा करना। अब आप एक मसीही अर्थात मसीह के अनुयायी हैं सो आपका जीवन ऐसा हो जैसा उसका था। हमें बताया गया है कि वह भलाई करता गया (प्रेरितों 10:36)।

सुसमाचार को बांटना

मसीहियों का काम सुसमाचार प्रचार करना अर्थात् सुसमाचार को बांटना है। यीशु ने स्वर्ग में वापस जाने से कुछ समय पूर्व अपने चेलों को ''सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार'' (मरकुस 16:15) करने के लिए कहा। मसीह सुसमाचार को रचने के लिए ही मरा; अब यह हमारा काम है कि इसे हर एक व्यक्ति को सुनाया जाए। एक आसान तरीका, जिससे आप सुसमाचार का प्रचार कर सकते हैं, वह है दूसरों को यह पुस्तक पढ़ने के लिए देना। उन्हें मसीही बनने के लिए उत्साहित करें। आइए औरों को मसीह में लाने के लिए हम सब, जो कुछ भी कर सकते है, करें।

औरों को सुधारना

मसीही का एक और काम औरों को सुधारना है। ''सुधारना'' शब्द का अर्थ है कमियों को दूर करके जैसा होना चाहिए, वैसा बनाना। जब आप पन्द्रह या अधिक लोगों की मण्डली बना लें तो कृपया ट्रुथ फ़ॉर टुडे वर्ल्ड मिशन स्कूल को लिखें, और हम आपको बाइबल के अध्ययन में सहायता के लिए कुछ सामग्री भेजेंगे। आइए मसीह के ज्ञान और उसके मार्ग में बढ़ते चले जाएं, और अपने साथ बढ़ने के लिए औरों को उत्साहित करें।

औरों की सहायता करना

आप को परोपकार के काम भी करने चाहिए। अपने आप से पूछें ''मैं निर्धनों की सहायता किस प्रकार कर सकता हूं?'' यदि आप ज़रूरतमन्दों की परवाह नहीं करते तो आप मसीह के जैसे नहीं हो सकते (मत्ती 25:31-46)।

यहां मसीहियों द्वारा किए जाने वाले कुछ, भले कामों की एक सूची प्रस्तुत है:

- औरों को सुसमाचार की शिक्षा देना
- बीमारों की सेवा करना
- परमेश्वर के बारे जानने में बच्चों की सहायता करना
- भूखों को खाना खिलाना
- विधवाओं और अनाथों की सहायता करना
- जेलों में लोगों के पास जाना
- अतिथि-सत्कार करना
- मसीही साहित्य बांटना
- औरों को आराधना सभाओं में निमन्त्रण देना
- दूसरों के लिए प्रार्थना करना
- जो निरक्षर हैं, उन्हें बाइबल पढ़ कर सुनाना

यीशु इस संसार में सेवा करने के लिए आया। वह सेवा करवाने नहीं बल्कि दूसरों की सेवा करने और बहुतों को छुड़ाने हेतु अपनी जान देने के लिए आया (मरकुस 10:45)। जिस प्रकार यीशु दूसरों के लिए मरा, हम नहीं मर सकते; परन्तु हम उन्हें सुसमाचार सिखाकर, मसीह में बढ़ने में सहायता करके और जब उन्हें कष्ट हो तो उन पर तरस दिखाकर उनकी सहायता करने के लिए जी सकते हैं।

सारांश

क्या आपने प्रेरितों 8 में कूश देश के मन्त्री की कहानी पढ़ी है? यदि नहीं, तो इस पुस्तक को पढ़ना बन्द करके पहले वह कहानी पढ़ें। फिलिप्पुस को भेजा गया कि वह उसे सुसमाचार बताये। मन्त्री ने सुसमाचार को आनन्द से ग्रहण किया और मसीही बन गया।

फिलिप्पुस को आत्मा की प्रेरणा थी। यह पुस्तक जो आप पढ़ रहे हैं, आत्मा की प्रेरणा से नहीं लिखी गई (अन्तिम भाग, नये नियम को छोड़कर)। परन्तु इन पृष्ठों में आपने पढ़ा कि उस उद्धार को जो मसीह लाया और कलीसिया जिसकी स्थापना उसने की, के विषय में नया नियम क्या सिखाता है। इस प्रकार इन पृष्ठों ने आपका ध्यान आत्मा की प्रेरणा से लिखी हुई पुस्तक अर्थात बाइबल की ओर दिलाया है। जो कुछ आपने यहां पढ़ा है उसकी तुलना पवित्र बाइबल से करें तो आप पाएंगे कि हमने आपको वही सिखाने का प्रयत्न किया है जो नया नियम सिखाता है। परमेश्वर ने उस मन्त्री को उद्धार पाने का एक अवसर दिया। यह एक बहुत लज़्बा, ज़िंचा हुआ अध्ययन नहीं था; परन्तु एक मसीही बनने और मसीही जीवन जीने के लिए सिखाने के लिए पर्याप्त था। हमने आपको वही शिक्षा देने का यत्न किया है। अब आपको अवसर मिला है कि आप इसका पूरा लाभ उठाएं। हम आपको सच्चे मन से अलविदा कहते हैं। सुसमाचार की आज्ञा मानने पर हमारी प्रार्थना है कि परमेश्वर की भरपूर आशीषें आप पर आयें जो उसने अपने पुत्र के द्वारा दी हैं। यदि पहले नहीं तो स्वर्ग में आपसे मिलने के लिए हम आपकी राह देखेंगे।

अध्ययन के लिए प्रश्न

(उत्तर पृष्ठ 245 पर)

1. प्रश्न ''आप यीशु के साथ क्या करेंगे? के अनन्त तात्पर्य क्यों है?''
2. क्या शिशुओं और छोटे बालकों को बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है? क्यों अथवा क्यों नहीं?
3. बपतिस्मे का क्या उद्देश्य है?
4. वे कुछ प्रश्न कौन से हैं जो मसीह की कलीसिया को ढूंढने में आपकी सहायता करेंगे?
5. कौन सी आयत सिखाती है कि बपतिस्मा पानी में गाड़े जाना है?

6. एक मसीही के जीवन को संक्षेप में बताने का अच्छा ढंग क्या है?
7. एक मसीही परमेश्वर के वचन के निकट क्यों रहेगा?
8. हर रविवार कलीसिया परमेश्वर की आराधना के लिए मिलेगी। आराधना की कौन सी अभिव्यक्तियां उपयोग की जानी चाहिए?
9. यीशु ने जब प्रभु भोज की स्थापना की तो उसमें कौन सी दो वस्तुओं का इस्तेमाल किया?
10. आपको एक मसीही बनने और मसीही के रूप में जीने के लिए कौन से चार पग उठाने आवश्यक हैं?

शब्द सहायता

पवित्र शास्त्र – बाइबल के, दोनों नियम पुराना और नया। पुराना नियम यहूदियों के लिए परमेश्वर की व्यवस्था थी और उसने नये नियम तक पहुंचाया (गलतियों 3:24), जो कि आज सब लोगों के लिए है। इसमें संसार की परमेश्वर के द्वारा सृष्टि, उसके चुने हुए लोगों अर्थात इस्राएल को व्यवस्था दिया जाना, आत्मा की प्रेरणा की कविता, और परमेश्वर के भविष्यवक्ताओं के द्वारा उसकी शिक्षाएं शामिल हैं।

[1]नये नियम की कलीसियाओं का संगठन सादा और बुनियादी होता था। पहला, सेवक और शिक्षक होते थे जो वचन का प्रचार करते और शिक्षा देते थे। दूसरा, हर एक मण्डली जो परिपक्व हो जाती थी उसमें प्राचीन होते थे (जिन्हें ''निरीक्षक,'' ''चरवाहे,'' ''पासबान'' कहा जाता था) जो मण्डली की अगुआई और उसकी निगरानी करते थे। तीसरा, हर एक मण्डली में सेवक होते थे जो कि प्राचीनों की निगरानी में कलीसिया की सेवा करते थे। [2]नया नियम कलीसिया का सिर केवल एक ही बताता है अर्थात मसीह। उसकी कलीसिया का कोई सांसारिक मुज़्यालय नहीं है; कलीसिया की हर मण्डली केवल मसीह की अगुआई में चलती है।